ध्येय IAS®

most trusted since 2003

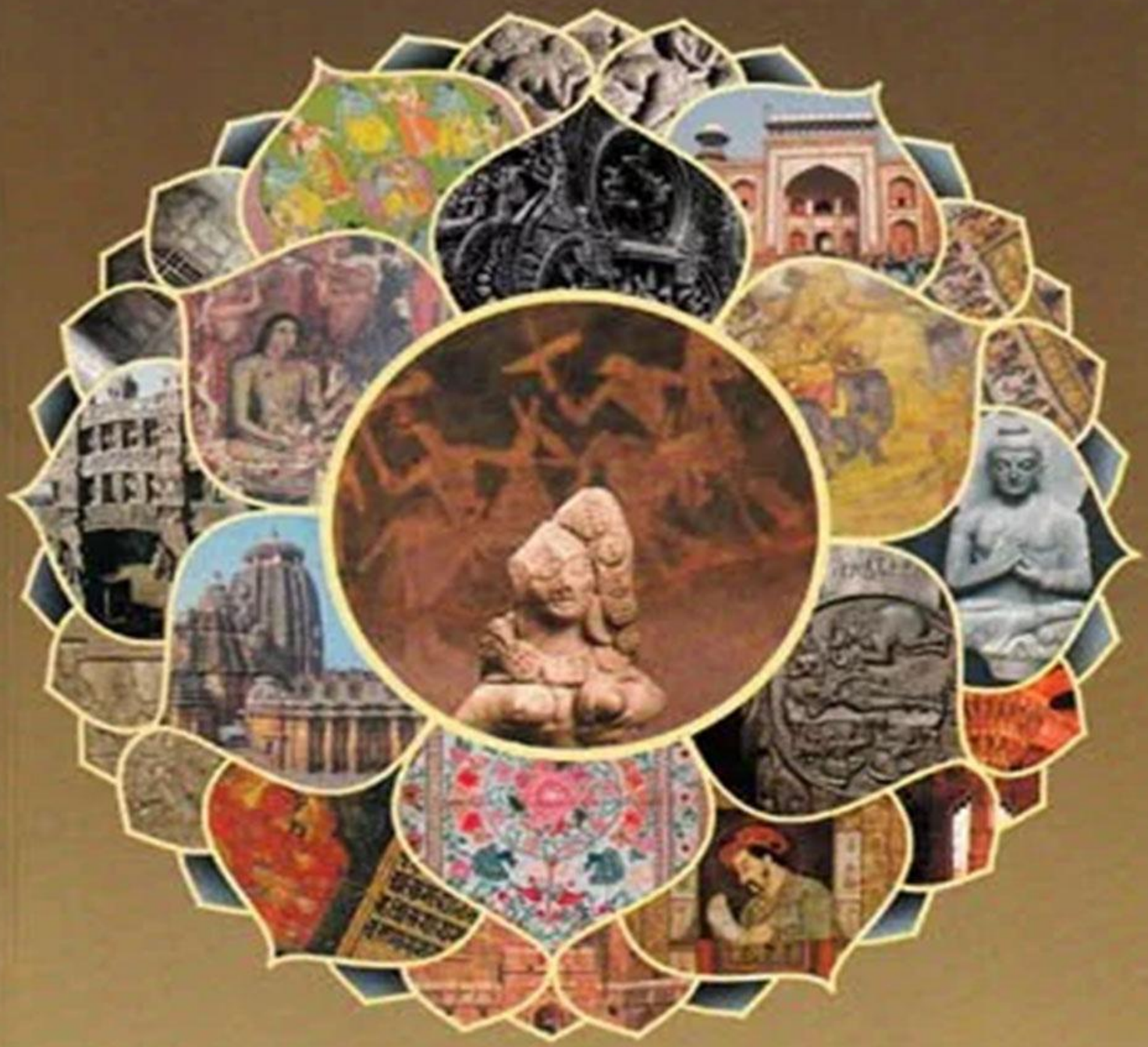

Indian Art & Culture

most trusted since 2003

Address: Plot No. A-12,13, Flat No. 201, 2nd Floor, Ansal Building, Mukherjee Nagar, New Delhi, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26, 9205274741/42, 011-49274400

भारतीय मूर्ति और चित्रकला: सैन्धव कालीन मूर्तिकला "भाग - 1"
(Sculpture and Painting: Indus Period Sculptures "Part - 1")

परिचय

जब कोई कला के संदर्भ में बात करना है तो आमतौर पर उसका अभिप्राय दृष्टिमूल कला से होता है, जैसे-वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्र कला। प्राचीन कला में ये तीनों पहलू आपस में मिले हुए थे। प्राचीन साहित्य से पता चलता है कि राजे-महाराजे सुन्दर चित्रें एवं मूर्तियों से सुसज्जित भवनों में निवास करते थे। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो प्रारंभ में वास्तुकला में ही मूर्तिकला एवं चित्रकला का समावेश था। किंतु जैसे-जैसे इनका विकास होता गया, वैसे-वैसे इन्होंने अपना पृथक एवं विशिष्ट ग्रहण कर लिया।

भारत में मूर्तिकला

मूर्तिकला को तक्षण कला भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के पाषाणों अथवा धा ातुओं से मूर्तियों का निर्माण किया जाता है। प्राचीन काल से ही भारत एक धर्म प्रधान देश रहा है और यहाँ के निवासी देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते आये हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से वर्तमान तक प्रत्येक काल में मूर्तिकला भारत में कला अस्तित्व बनाये रखने में सफल रही। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि भारत में मूर्तिकला के विकास की प्रवृत्ति प्रायः धार्मिक रही। इसके बावजूद भारत में धर्मनिरपेक्ष मूर्तिकला के अस्तित्व के उदाहरण भी मिलते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय शासक या राजा लोग अपने निवास स्थलों को कलात्मक मूर्तियों से सुसज्जित रखते थे।

इसी क्रम में हम अपने Art & Culture Series में आज सैन्धव कालीन मूर्ति कला के बारे में जानने का प्रयास करेंगे-

सैन्धव कालीन मूर्तिकला

सिन्धु घाटी सभ्यता एक विकसित सभ्यता थी। स्वाभाविक है कि उस समाज में कला और शिल्प भी उन्नत अवस्था में होगी। इस काल में देवी-देवताओं की, नारी की, नर्तकी की, बौनों की, पशु तथा पक्षियों की मूर्तियों का निर्माण हुआ। सिंधु सभ्यता की इन मूर्तियों में आश्यर्चजनक परिपक्वता देखने को मिलती है। ये मूर्तियाँ पाषाण, धातुओं और मिट्टी से निर्मित हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनका निर्माण सेलखड़ी, अलबेस्टर, चूना-पत्थर, बलुआ पत्थर, स्लेटी पत्थर आदि की सहायता से किया गया है।

प्रस्तर मूर्तियों में सर्वप्रथम मोहनजोदड़ो से प्राप्त योगी अथवा पुरोहित की मूर्ति का उल्लेख किया जा सकता हैं। इसे योगी की मूर्ति मानने का कारण, इसकी मुद्रा है। मूर्ति की आधी आँख मुंदी हुई है, जिससे वह ध्यानमग्न योगी की तरह प्रतीत होते है।

मस्तक पर गोल अलंकरण है तथा यह बाँये कंधे को ढकते हुए तिपतिया छाप शाल ओढ़े हुए है जो यह दर्शाता है कि उन्हें कढ़ाई का ज्ञान था। इसके नेत्र अधखुले तथा निचला होठ मोटा तथा उसकी दृष्टि नाक के अग्रभाग पर टिकी हुई है। मस्तक छोटा तथा पीछे की

Downloaded From: www.dhyeyaias.com

Address: Plot No. A-12,13, Flat No. 201, 2nd Floor, Ansal Building, Mukherjee Nagar, New Delhi, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26, 9205274741/42, 011-49274400

ओर ढलुआ है, गर्दन कुछ अधिक मोटी है तथा मुंह की गोलाई बड़ी है। मौके के अनुसार, कलाकार ने इस मूर्ति के माध्यम से किसी विशिष्ट व्यक्ति का यथार्थ रूपांकन किया है।

हड़प्पा की पाषाण मूर्तियों में दो सिर रहित मानव मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पहली मूर्ति किसी पुरूष की है और दूसरी मूर्ति को विद्वानों ने नर्तकी बताया है। इन दोनों ही मूर्तियों के शरीर सौष्ठव को कलाकार ने अत्यंत कुशलता से उभारा है। पहली मूर्ति लाल बलुए पत्थर की तथा दूसरी काले पत्थर की बनी है। दोनों ही मूर्तियों के मस्तक तथा पैर टूटे हुए हैं। पहली मूर्ति किसी सीधे खड़े पुरूष की है। इसकी गर्दन के ऊपर, कन्धों के निचले भागों तथा जंघों के नीचे छेद बने हुए हैं जो किसी बरमें द्वारा उकेरे हुए लगते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर के विविध अंगों जैसे मस्तक, हाथ, पैर आदि को अलग-अलग बनाकर किसी मशाले द्वारा जोड़ने की प्रथा उस काल में प्रचलित थी। इस नग्न प्रतिमा को कुछ विद्वान कोई जैन मूर्ति मानते हैं। दूसरी मूर्ति जो स्लेटी पत्थर की है, का मुण्ड अलग से बैठाया गया था तथा हाथ-पैर भी एक अधिक भागों में अलग से जोड़े गए थे। मार्शल, मैके, ह्वीलर आदि विद्वानों ने इसे किसी पुरूष की मूर्ति माना है।

इनका गठन अत्यंत सजीव एवं प्रभावशाली है जिन्हें देखने से ऐतिहासिक युग की दीदारगंज से प्राप्त यक्षिणी जैसी कुछ मूर्तियों का आभास होने लगता है। यही नहीं, यूनानी कलाकारों ने गांधार की बुद्ध मूर्तियों के निर्माण में जो यथार्थता दिखायी है, वह इन मूर्तियों में भी देखी जा सकती है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों की पाषाण मूर्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पा के शिल्पकार यथार्थ रूपांकन में अधिक दक्ष थे जबकि मोहनजोदड़ो के शिल्पकार शरीर के विविध अंगों का यथार्थ रूप उकेरने में सफल नहीं हो पाये हैं।

पाषाण के अतिरिक्त सैंधव कलाकारों ने धातुओं से भी सुंदर प्रतिमाओं का निर्माण किया। इस सभ्यता की कला के बचे नमूनों में से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय मोजनजोदड़ो से प्राप्त एक नर्तकी की कांस्य मूर्ति है। यह सुन्दर एवं भावयुक्त है। इसके शरीर पर वस्त्र नहीं है। बाँया हाथ कलाई से लेकर कंधे तक चूडियों से भरा है तथा नीचे की ओर लटक रहा है। दायें हाथ में वह कंगन तथा केयूर पहने हुए है और वह कमर पर टिका हुआ है। उसके घुंघराले बाल पीछे की ओर जूड़ा में बंधे हुए हैं, गले में छोटा हार तथा कमर में मेखला है।

नर्तकी के पैर जो थोड़ा आगे बढ़े हुए हैं, संगीत के लय के साथ उठते हुए जान पड़ते हैं। अपनी मुद्रा की सरलता एवं स्वाभाविकता के कारण यह मूर्ति सबकों अचंभित करती है। मार्शल के अनुसार, इस मूर्ति के माध्यम से कलाकार ने किसी आदिवासी स्त्री का यथार्थ रूपांकन करने का प्रयास किया है।

नर्तकी की मूर्ति यह दर्शाती है कि सैंधव लोगों को न केवल नृत्य-संगीत का ज्ञान था बल्कि उसमें रूचि भी थी। साथ ही यह मूर्ति यह भी दर्शाती है कि वहाँ के लोगों का जीवन स्तर केवल जीविका चलाने के साधन तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उससे कहीं उच्च था और लोगा विलाश जीवन सतर का लुत्फ उठाते थे।

सैन्धव कालीन मूर्तिकला के बारे में कुछ अन्य जानकारियों के साथ हम अपने अगले भाग में जल्द ही प्रस्तुत होंगे।

Downloaded From: www.dhyeyaias.com

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

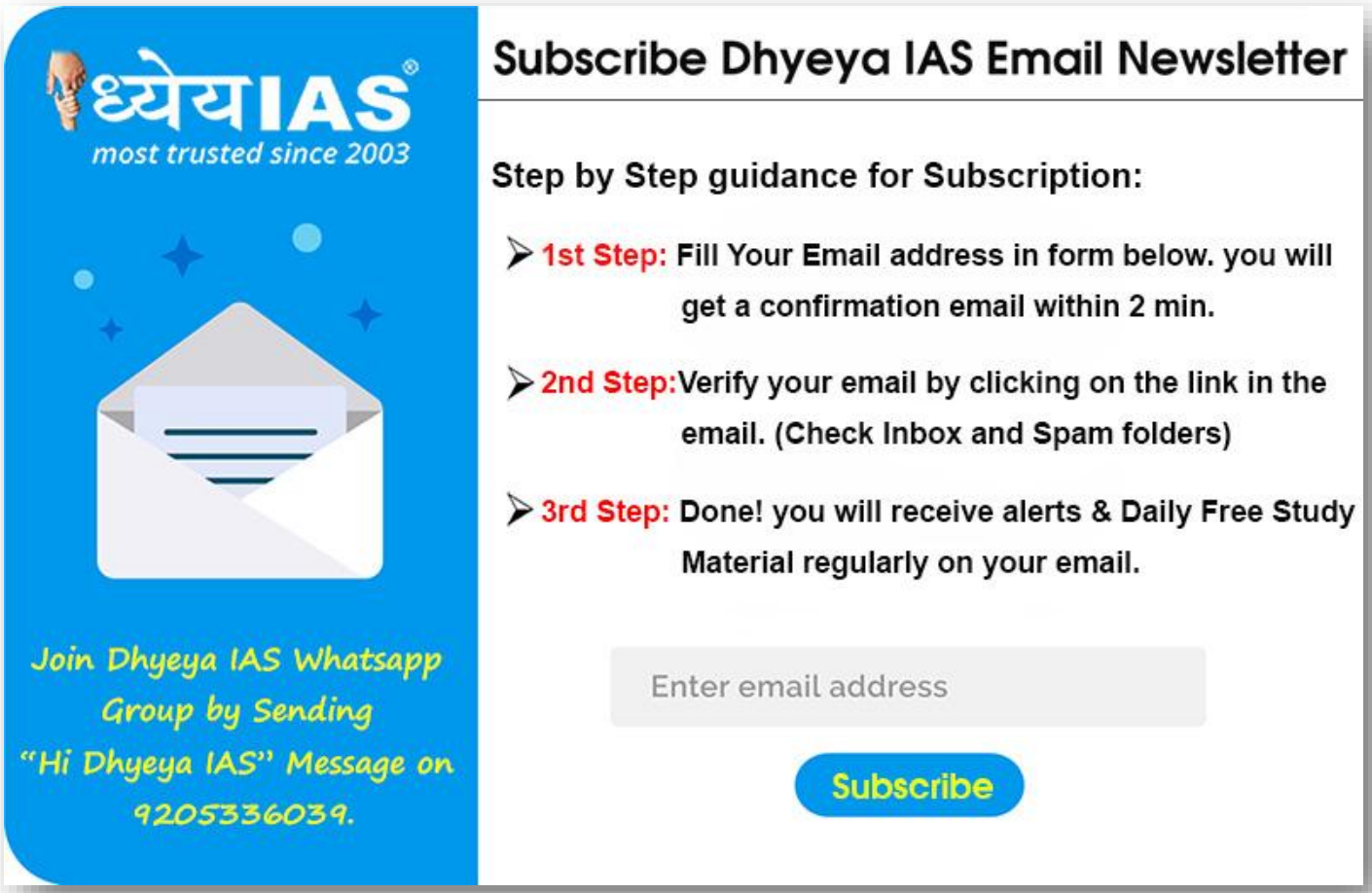

ध्येय IAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए 9355174441 पर "Hi Dhyeya IAS" लिख कर मैसेज करें

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400